

जीवधाकः, पुं, (जीवो हितकरः धाकः) जीवाख्यः धाको वा।) मालवे प्रसिद्धधाकविशेषः। तद्-पर्यायः जीवन्तः २। इत्कालाः ३। तात्पत्रः ४। प्रवालः ५। धाकवीरः ६। समधूरः ७। मेषकः ८। अस्तु गुणाः। सुमधुरलभम्। दृष्ट्यात्म्। वस्ति-धोघनलभम्। दीपगलभम्। पाचनलभम्। वल्ललभम्। दृष्ट्यात्म्। पित्तापहारकलभम्। इति राजनिर्वाहः।

जीवशुक्रा, ख्यौ, (जीवयतीति। जीव+ख्यौ+चत्। जीवा हितकरी शुक्रा शुभवर्णेता।)

जीवकालोली। इति राजनिर्वाहः।

जीवश्रेष्ठा, ख्यौ, (जीवाय जीवनाय श्रेष्ठा।)

क्षिणिनामौषधम्। इति राजनिर्वाहः।

जीवसंज्ञः, पुं, (जीव इति संज्ञा यस्य। यहा, जीवस्य संज्ञा आख्या संज्ञा यस्य।) कामदृष्टिरुचः। इति राजनिर्वाहः।

जीवसाधन, ख्यौ, (जीवस्य जीवनस्य साधनं कारणम्।) धार्यम्। इति राजनिर्वाहः।

जीवस्तः, ख्यौ, (जीवं प्राणिन् स्फुते इति। चृ+क्षिप्।) जीवतोका। जीवतुपुत्रिका। हेमचन्द्रः।

३। १६४॥ (यथा, महाभारते। १५००।७।

“जीवकूर्मैरस्त्वर्थंने ! वहसूखागुणाविता।

सुभगा भागवत्पन्न वज्रपलौ पतिग्रता ॥”

जीवस्तान्, ख्यौ, (जीवस्य जीवनस्य खासम्।)

मर्मं। इति छलाधुधः।

जीवा, ख्यौ, (जीवयतीति। जीव+ख्यौ+चत्। तत्पत्रः।) जीवनीष्ठाः। मौर्वीः। (यथा, आर्यासमधाराम्। ३। २१।

“विर्गुण इति छत इति च छावेकार्थंभिहायनौ विह्वि।

प्रद्वय घरुर्गण्यम् निर्जीवं तदिह ग्रंसन्ति ॥”

“निर्गता जीवा च्या यस्तात् तत्। ‘जीवा च्या शिङ्गिनीवपि’ इवभिधानात् ।” इति तड़ोका ॥)

वशा। शिङ्गितम्। भूमिः। इति मेदिनी। वे, च। जीवितम्। इति जटाधरः।

जीवतुः, पुं, ख्यौ, (जीवबनेति। जीव+“जीवे-रातुः।”) उत्कर्षः। १। ८०। इति करयो आतुः।)

भल्मू। जीवनौषधम्। (यथा, काश्मीरखण्डे। २८। ६५।

“जीवजीवातुलतिका जमिजमनिवर्हिणी ॥”

“जीवनां प्राणिनां जीवनौषधखूपा।” इति तड़ोका ॥\*॥ (जीव+भावे आतुः।) जीवितम्।

इति मेदिनी। ते, ११२॥ (यथा, उत्तररामचरिते इच्छै।

“इह छत इति च छावेकार्थंभिहायनौ विह्वि।

प्रद्वय घरुर्गण्यम् निर्जीवं तदिह ग्रंसन्ति ॥”

रामस्य गात्रमयि दुर्बल्लग्नभेदिन्द्र-

स्वीताविवासनपटोः करुणा झुतस्ते ॥”

जीवात्मा, [ न ] पुं, (जीवस्य जीवनस्य आत्मा अधिभाता। यहा, जीवस्यायै आत्मा चेति कर्मभारयः।) देही। तत्पत्रः। पुनर्भवी २। जीवः ३। असुमान् ४। खलभम् ५। देहाभृत् ६।

गन्धवहृधिरचन्द्रनोचिता

जीवितेश्वरस्तिं जगाम सा ॥”

“जीवितेश्वरस्य अन्तकस्य प्राणीश्वरस्य च वस्तिं जगाम।” इति तड़ीकायां मङ्गिनाथः॥)

चन्द्रः। दूर्घ्यः। इति शब्दरत्नावली। जीवातुः।

इति हेमचन्द्रः। जीवितेश्वरे, चि। इति मेदिनी। ये, ६५॥

जीवी, [ न ] पुं, (जीवो देहस्येति। जीव+

इनि।) प्राणी। यथा, ब्रह्मवैवर्ते गणेशखण्डे।

“जीविनां दात्मो रोगः कर्मभोगः शुभाशुभः।

भक्तो वैद्यत्स्त निहन्त छायाभत्तिरसायनात् ॥”

जीया, ख्यौ, (जीवाय जीवनाय हिता। जीव+

यत्।) गोहृरदग्धा। जीवनी। हरीतकी।

इति राजनिर्वाहः।

जु, रंहस्यि। इति कविकल्पहमः॥ (भाँ-परं-

चकं-चनिट्।) रंहो देवगतिः। जवति घोटकः।

इति दुर्गादासः॥

जु, ड गत्याम्। इति कविकल्पहमः॥ (भाँ-चालं-

सकं-चनिट्।) ड, जवते। इति दुर्गादासः॥

जुग, इ वागे। इति कविकल्पहमः॥ (भाँ-परं-

सकं-सेट्।) इ, कर्मणि जुझते। इति दुर्गादासः॥

जुगुस्तन्, ख्यौ, (गुप + स्त्रीं सन् + ल्युट्।) निष्ठा।

इति हेमचन्द्रः। १। १५४॥ (निष्ठाश्चीजे, चि। तच

“अगुदात्तेतच इलादेः।” ३। २। १४६। इति शुच्॥

जुगुस्ता, ख्यौ, (गुप निष्ठायाम् + सन् + भावे अ-

स्त्रताप्।) निष्ठा। इवमरः। १। ६। १३॥

(यथा, साहित्यहर्षी। ३। १७६।

“हेषिच्छामिभिर्हाँ जुगुस्ता विषयोऽवाम्।”)

जुङ्गः, पुं, (जुगि+चत्।) दृष्टदारकः। इव-

मरः। २। ४। १३७॥ (यथास्य पर्यायाः।

“जुङ्ग च्यंगन्वाच्छगलाम्बावेगी दृष्टदारकः॥”

इति वैद्यकरलमालायाम्॥

जुङ्गकः, पुं, (जुङ्ग + स्त्रीं कन्।) दृष्टदारकवृचः।

इति राजनिर्वाहः॥

जुङ्गा, ख्यौ, (जुङ्ग + टाप्।) जुङ्गः। इवमर-

टीकायां रमात्मायः॥

जुङ्गितः, चि, (जुग इ वागे + कर्मणि कन्।)

वत्तः। इति वैद्यकरसाम्॥

जुट्कं, ख्यौ, (जुट संहतौ+“इगुपथेति।” ३।

१। १३५। इति कः। ततः संज्ञायै कन्।)

जटा। इति शब्दरत्नावली।

जुटिका, ख्यौ, (जुटक + टाप्। टापि अत इवलभ।) शिखा। इति शब्दरत्नावली। भुंटी

इति टिकी। इति च भावा। (यथा, आङ्गिकतत्त्वात्त्रभूप्राणवचनम्।

“जुटिकाच ततो बहा ततः कर्म समारभेत्।”)

जुङ्ग, क गोदे। इति कविकल्पहमः॥ (चुरां-

परं-सकं-सेट्।) क, जोड़यति। गोदः प्रेर-

णम्। इति दुर्गादासः॥

जुङ्ग, श गतौ। इति कविकल्पहमः॥ (तुहाँ-परं-सकं-

सेट्।) श, जुङ्गति जोड़िता। इति दुर्गादासः॥